जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – नवम्बर 2022 ।। अंक – 28 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

दीदी की रसोई से
मरीजों को मिला घर जैसा भोजन
(पृष्ठ – 02)

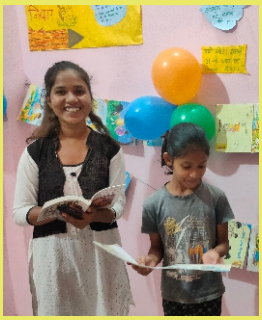

धनतेरस पर दीदियों को मिली
पुस्तकालय की सौगात
(पृष्ठ – 03)

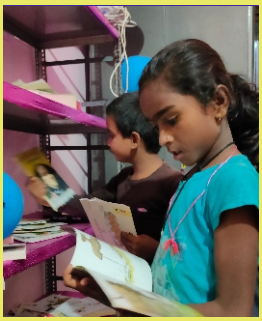

ज्ञान का प्रकाश फैला रहा
दीदी का पुस्तकालय
(पृष्ठ – 04)

दीदी की रसोई : आत्मनिर्भरता के साथ बढ़ा आत्मसम्मान

बिहार में जीविका की दीदियां परिवर्त्तन की वाहक एवं राज्य के नवनिर्माण की सृजनकर्त्ता हैं। जीविका दीदियां सामाजिक बदलाव के साथ आर्थिक विकास के अपने ध्येय की और निरंतर गतिमान हैं। इसी कम को आगे बढ़ाते हुए जीविका की दीदियां सबके लिए शुद्ध एवं पौष्टिक भोजन की पहल की है एवं उद्यम में कुशलता हासिल कर आर्थिक स्वाबलंबन की दिशा में आगे बढ़ने का कार्य कर रही हैं। राज्य सरकार के दिशा–निर्देश पर कुडुम्बश्री के तकनीकी सहयोग से राज्य के विभिन्न जिलों में जीविका दीदियों द्वारा 'दीदी की रसोई' की स्थापना एवं उसका सफल संचालन किया जा रहा है।

जीविका द्वारा संचालित की जा रही इस महत्वपूर्ण गतिविधि के सफल कियान्वयन में जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग एवं राज्य स्वास्थ्य समिति का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। अभी राज्य में कुल 76 दीदी की रसोई का संचालन किया जा रहा है। दीदी की रसोई का संचालन स्थानीय स्तर पर जीविका संकुल संघों द्वारा किया जा रहा है। राज्य में पहली बार दीदी की रसोई का संचालन वैशाली सदर अस्पताल में वर्ष 2018 में प्रारंभ किया गया, वहीं 76 वां दीदी की रसोई की शुरूआत भोजपुर में 2022 में हुई।

बिहार के आर्थिक क्रियाकलापों में महिलाओं की बढ़ रही भागीदारी की वजह से राज्य के माहौल में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। इसी कड़ी में बिहार के माननीय मुख्यमंत्री के निर्देश पर राज्य के सरकारी अस्पतालों में दीदी की रसोई का सफल संचालन किया जा रहा है ताकि अस्पतालों में मरीजों को समय पर सस्ता, शुद्ध एवं स्वादिष्ट भोजन मिल सके। माननीय मुख्यमंत्रीजी के निर्देशानुसार जीविका के सामुदायिक संगठनों द्वारा राज्य के समस्त जिला अस्पतालों एवं अनुमंडलीय अस्पतालों में दीदी की रसोई का सफलतापूर्वक संचालन किया जा है।

एक समय था जब विभिन्न सरकारी संस्थानों खासकर अस्पतालों में भर्ती मरीजों एवं उनके परिजनों, सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों एवं संस्थानों में स्वच्छ, पौष्टिक एवं गुणवतापूर्ण भोजन मिलना किसी चुनौती से कम नहीं था। इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए जीविका संपोषित स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने इस दिशा में कदम रखा और सरकारी कार्यालयो एवं संस्थानों में स्वच्छ, पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन की उपलब्धता के लिए सार्थक प्रयास प्रारंभ किया। दीदियों के इस नवाचार की सफलता को राज्य सरकार की सराहना के साथ पूरे बिहार में विस्तार को बल मिला। दीदियों द्वारा संचालित रसोई में आम लोगों के लिए उचित मूल्य पर घर जैसा भोजन एवं अल्पाहार की समुचित उपलब्धता हो रही है। साथ ही यह गतिविधि दीदियों के आर्थिक स्वावलंबन में मील का पत्थर साबित हुई है।

दीदी की रसोई की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह समुदाय की महिलाओं के स्वामित्व एवं उनके द्वारा संचालित है। इसके साथ ही यह सतत् लाभकारी उद्यम का प्रतिरूप है। इस गतिविधि द्वारा जीविका दीदियों को प्रशिक्षित कर उन्हें पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। इस गतिविधि द्वारा समाज को स्वच्छता के साथ पोषणयुक्त भोजन/अल्पाहार की उपलब्धता सुनिश्चित है। राज्य में संचालित 76 दीदी की रसोई से कुल 845 जीविका दीदियां जुड़ी हैं एवं उन्हें माह में 5,000 से 10,000 की आमदनी हो रही है।

सदर अस्पताल एवं अनुमंडल अस्पतालों में दीदी की रसोई की सफलता के बाद राज्य सरकार बिहार के सभी सरकारी नर्सिंग स्कूल/संस्थान/कॉलेज, पारामेडिकल संस्थान एवं फार्मेसी कॉलेजों में छात्र/छात्राओं के लिए भोजन की उपलब्धता (मेस) संचालन हेतु जीविका को निर्देशित किया है। राज्य सरकार के निर्देश उपरांत बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) द्वारा संपोषित सामुदायिक संगठन यथा 'दीदी की रसोई' का संचालन प्रारंभ किया जाने वाला है। इस दिशा में बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग के अपर सचिव द्वारा राज्य के सभी नर्सिंग स्कूल/संस्थान/कॉलेज, पारामेडिकल संस्थान एवं फार्मेसी कॉलेज, बिहार के प्राचार्य को पत्र लिखकर जीविका द्वारा संपोषित सामुदायिक संगठन यथा दीदी की रसोई के माध्यम से ही भोजन की व्यवस्था का निर्देश दिया है। इन संस्थानों में दीदी की रसोई के संचालन के लिए जीविका द्वारा प्रयास प्रारंभ कर दिया गया है।

जीविका दीदियों द्वारा संचालित दीदी की रसोई एक तरफ जहां खास एवं आम लोगों को स्वच्छ, पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन की उपलब्धता तो सुनिश्चित कर ही रही है, वहीं रोजगार सृजन की दिशा में भी मील का पत्थर साबित हुई है।

एसबीआई दीदी की रसोई

"दीदी की रसोई" समुदाय आधारित कैंटीन जीविका (बीआरएलपीएस) की पहल है जिसमें संस्थागत संगठनों को गुणवत्तापूर्ण और स्वास्थ्यकर भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जहां समुदाय के लिए आजीविका के अवसर पैदा करने के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण और स्वच्छ भोजन उचित मूल्य पर उपलब्ध कराया जा सके।

एसबीआई, पटना के बैंकरों को गुणवत्तापूर्ण और स्वास्थ्यकर भोजन उपलब्ध कराना एसबीआई प्रबंधन के लिए एक चुनौती थी। इसलिए भारतीय रिजर्व बैंक, पटना के बाद एसबीआई पटना ने एसएचजी सदस्यों में विश्वास दिखाया और उन्हें घर जैसा, स्वस्थ और स्वच्छ भोजन उपलब्ध कराने के लिए एसबीआई परिसर में दीदी की रसोई संचालन की अनुमति दी।

एसबीआई, पटना और सागर ग्राम संगठन के बीच एक समझौता ज्ञापन के बाद एसबीआई पटना में दीदी की रसोई का उद्घाटन 22 दिसंबर, 2021 को किया गया। प्रशिक्षण के तकनीकी भागीदार कुडुम्बश्री–केरल ने सदर प्रखंड की दीदियों को 10 दिनों का गहन प्रशिक्षण प्रदान किया। मॉड्यूल में ग्राहकों के साथ संचार, लेखांकन और बहीखाता, स्वच्छता और स्वच्छता का रखरखाव, संकट प्रबंधन, कच्चे माल की खरीद की तकनीक, मेनू योजना, लागत और कई अन्य प्रासंगिक कौशल और उद्यमी आदि विषय शामिल थे।

सागर डीकेआर की रीता देवी कहती हैं "हम एसबीआई परिसर में डीकेआर चला रहे हैं जिसमें घर जैसा माहौल, घर जैसा स्वच्छ भोजन उचित दर पर उपलब्ध है। हम सुबह 09 बजे से शाम 06 बजे तक काम करते हैं। सम्मान और आत्मविश्वास की भावना के लिए काम करने के लिए एक सम्मानजनक स्थान मिल रहा है। दीदी की रसोई एसबीआई के अधिकारियों और आगंतुकों को भी पूरे दिन का भोजन प्रदान करती है। एसबीआई डीकेआर में प्रतिदिन 300–400 लोगों के लिए भोजन और नाश्ता तैयार किया जाता है। सागर डीकेआर की प्रतिदिन की बिक्री औसत 5,000 से 6,000 है।"

दीदी की रसोई से मरीजों को मिला घर जैसा भोजन

जीविका की एक शानदार पहल है– 'दीदी की रसोई'। इस पहलकदमी द्वारा सामुदायिक स्वामित्व वाली कैंटीन को बढ़ावा मिला है। साथ ही मरीजों और ग्राहकों को पौष्टिक और स्वादिष्ट खाना उत्तम मूल्य पर उपलब्ध है। दीदी की रसोई में खाना पकाने से लेकर भोजन परोसने तक सफाई और स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है। शक्ति दीदी की रसोई भोजपुर जिले की दूसरी दीदी की रसोई है जिसका उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री, बिहार द्वारा 16 सितम्बर 2022 को बिहार राज्य मानसिक स्वास्थ्य एवं सहबद्ध विज्ञान संस्थान, कोईलवर में हुआ था। शक्ति दीदी की रसोई की शुरुआत ग्राम संगठन की बैठक में चर्चा से शुरू हुई। शक्ति संकुल संघ के द्वारा संचालित सभी ग्राम संगठनों की बैठक में चर्चा की गई और दीदी की रसोई के बारे में बताया गया कि बिहार राज्य मानसिक स्वास्थ्य एवं सहबद्ध विज्ञान संस्थान, कोईलवर में दीदी की रसोई खोलने का प्रस्ताव मिला है। जिसके बाद इच्छुक दीदियों में से ग्राम संगठनों द्वारा 28 दीदियों का चयन किया गया। शक्ति दीदी की रसोई में कुल 28 जीविका दीदी व्यापार में भागीदार हैं। हर जीविका दीदी ने 10,000 हजार रूपये का योगदान दिया और व्यापार में भागीदारी सुनिश्चित की। जहाँ पहले दीदियों की आमदनी लगभग शून्य थी वह आज प्रति माह 5000 से 8000 हज़ार कमा रही हैं और मुनाफे में उनकी हिस्सेदारी अलग से है। शक्ति दीदी की रसोई ने आज दीदियों को नई पहचान दिलाई है। अस्पताल के डॉक्टर, मरीज और स्टाफ सभी अब उन्हें जानने–पहचाने लगे हैं। यहाँ काम कर रही दीदियों में नया आत्म विश्वास जाग उठा है।

यहाँ काम करने से दीदियों को रोजगार का नया अवसर मिला है जिसे वह अपने परिवार का पालन–पोषण बेहतर तरीके से कर पा रही हैं। साथ ही दीदियों को काफी कुछ नया सीखने को भी मिला है और उनकी ज़िन्दगी ऊर्जा से भी भर गई है। शक्ति दीदी की रसोई की वजह से अब मरीजों को घर जैसा भोजन उचित मूल्य पर उपलब्ध है। मरीजों, अस्पताल के कर्मचारियों और बाहरी ग्राहकों को भी दीदी की रसोई का भोजन काफी पसंद है।

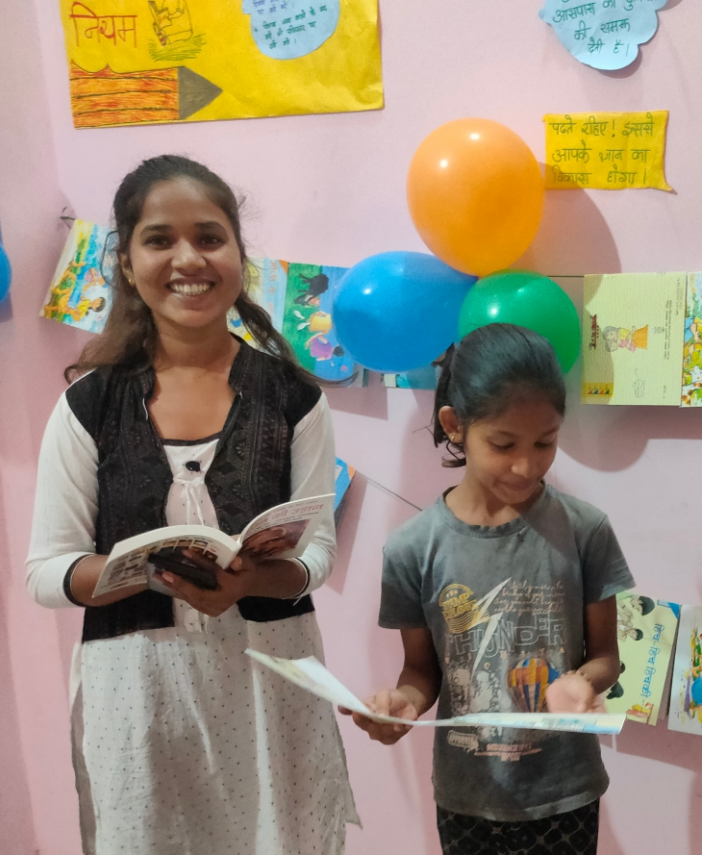

धनतेरस पर दीदियों को मिली पुस्तकालय की सौगात

आज शिक्षा गरीबी के कुचक्र को तोड़ रही है। शिक्षा से जुड़ाव में पुस्तकालय की महती भूमिका है। जिस तरह से पुस्तकें किसी भी पुस्तकालय की नींव होती है, वहीं पुस्तकालय ज्ञान का भंडार। धनतेरस के शुभ अवसर पर जमुई की जीविका दीदियों को नि:शुल्क पुस्तकालय का सौगात मिलना किसी उपलब्धि से कम नहीं है। "दीदी का पुस्तकालय" खुलने से आज जीविका दीदियों के बच्चे एक जगह पर संगठित होकर पढाई कर रहे हैं जो अपने आप में एक मिसाल है। धीरे–धीरे ही सही लेकिन बच्चों ने पुस्तकालय में आकर पढ़ना शुरू कर दिया है। प्रतिदिन करीब 20 से 25 की संख्या में बच्चें पुस्तकालय का लाभ उठा रहे हैं। इन बच्चों में कक्षा एक से लेकर 12वीं के छात्र शामिल हैं। जमुई जिले के सदर प्रखंड के खरगौर स्थित स्वाभिमान संकुल संघ के कार्यालय में 'दीदी का पुस्तकालय' का संचालन एवं प्रबंधन जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है।

सर्वविदित है कि आज के समय में ज्ञान अर्जन के विभिन्न माध्यम हैं, लेकिन सबसे उपयुक्त और सशक्त माध्यम पुस्तक है। पुस्तकें ज्ञान के साथ–साथ संस्कार भी पिरोती है। 22 अक्टूबर 2022 को धनतेरस पर जमुई जिले के सदर प्रखंड अंतर्गत स्वाभिमान जीविका महिला संकुल संघ में जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी के निर्देशन में 'ज्ञानदीपोत्सव–अभियान' के तहत 'जीविका दीदी का पुस्तकालय' का शुभारंभ किया गया। जमुई सदर प्रखंड के खरगौर स्थित स्वाभिमान संकुल संघ कार्यालय में 'दीदी का पुस्तकालय' की स्थापना की गयी। जीविका की सहयोगी संस्था 'आई सक्षम' के द्वारा 100 किताबें और पांच टैबलेट पुस्तकालय में उपलब्ध कराया गया है। जीविका "दीदी का पुस्तकालय" का संचालन एवं प्रबंधन स्वाभिमान संकुल संघ द्वारा किया जा रहा है। फिलहाल बच्चे स्कूल से आने के बाद पढाई के लिए पुस्तकालय आते हैं। पुस्तकालय में बच्चों को किताब के साथ–साथ टैब मिलने से उनका पढ़ाई में भी मन लग रहा है। बच्चे खेल–खेल में पढाई कर रहे हैं, जिससे उनके सीखने की प्रवृति काफी बढ़ी है।

सामुदायिक पुस्तकालय जीविका का अभिनव प्रयास

'जीविका दीदी का पुस्तकालय' बिहार में सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से संचालित जीविका का एक अविनव प्रयास है। वर्त्तमान में बिहार के चार जिलों में जीविका दीदी का पुस्तकालय का संचालन प्रारंभ किया गया है। गया जिले के डोभी प्रखंड स्थित सागर संकुल स्तरीय संघ एवं खिजरसराय के चिरैली बाजार स्थित सत्यम जीविका संकुल स्तरीय संघ द्वारा जीविका दीदी का पुस्तकालय का संचालन किया जा है। पुस्तकालयों को ज्ञान का स्थान कहते हैं। ऐसे में ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालयों होना जरूरी है ताकि लोगों में शिक्षा बढ़ने एवं प्रतिसपर्धा का माहौल निर्मित हो।

जीविका द्वारा सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से ग्रमीण महिलाओं का वित्तीय समावेशन कर जीविकोपार्जन में प्रोत्साहन देते हुए गरीबी उन्मूलन के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। सामुदायिक पुस्कालय इसी दिशा में एक अभिनव प्रयास है। जीविकोपार्जन प्रोत्साहन के अतिरिक्त स्थानीय लोग अपने ज्ञान में वृद्धि भी करें यही उद्देश्य पुस्तकालय का है। स्थानीय ग्रामीण बच्चों को विद्यालयों के अतिरिक्त एक ऐसा स्थान मिल सके जहाँ उनके ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए पुस्तकें एवं शैक्षणिक वतावरण उपलब्ध हो तथा इच्छुक जनों को किताबें भी मिल सके।

गया के डोभी एवं खिजासराय में जीविका दीदी का पुस्तकालय खुलने से बच्चों में उत्साह है। यहाँ उपलब्ध ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक पुस्तकों में बच्चों की रूचि देखी जा रही है। बच्चों ने कहा कि–'हमें काफी अच्छा लग रहा है कि पुस्कालय खुल गया है। हमें जब भी समय मिलता है हम यहाँ आकर पुस्तकें पढ़ते हैं।' चिरैली की अंशू जो पास के ही विद्यालय में दसवीं कक्षा में पढ़ती हैं ने कहा–'मुझे किताबें पढ़ना काफी अच्छा लगता है। चिरैली में पुस्तकालय खुल गया है, यह हमारे लिए काफी अच्छा है।'

जीविका दीदी का पुस्तकालय में रजिस्ट्रेशन करा कर कोई भी पुस्तकालय का सदस्य बन सकता है। यहाँ बच्चों एवं बड़ों दोनों के लिए कई प्रकार की किताबें हैं। स्थानीय लोगों ने पुस्तकालय के इस योजना को पसंद किया है। आम लोग कहते हैं कि–'पुस्तकालय से आसपास लोगों को फायदा तो होगा ही, वहीं बच्चों के ज्ञान का स्तर भी बढ़ेगा।

ज्ञान का प्रकाश फैला रहा दीदी का पुस्तकालय

जीविका द्वारा महिलाओं के उत्थान की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। आज जीविका से जुड़ी दीदियों के जागरुकता का ही परिणाम है कि समाज खुले में शौच, शराब, दहेज एवं बाल विवाह जैसी अनेक कुरीतियों से मुक्ति पा सका है। इन कुरीतियों पर विजयी होने के बाद दीदियों ने सोचा कि सारी बुराईयों की जड़ अशिक्षा या ज्ञान की कमी है। ज्ञान की कमी के कारण आम लोग सही और गलत का फर्क नहीं कर पाते हैं। जनहित में जीविका दीदियों ने पुस्तकालय खोलने का मन बनाया। पुस्तकालय खोलने का मुख्य उद्देश्य संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी जीविका दीदियों एवं उनके परिवार के बच्चों को उपयोगी अध्ययन सामग्री, जीविकोपार्जन में सहयोगी व्यवसाय के लिए उपयोगी पुस्तकें सहित डिजिटल शिक्षण सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध कराना है ताकि उनका ज्ञानवर्धन हो सके।

एक कहावत है "जहां चाह वहां राह"। इस तरह दीपावली के शुभ अवसर पर जीविका के संकुल स्तरीय संघों द्वारा ज्ञान का दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया गया। संकुल संघ द्वारा पुस्तकालय की स्थापना संकुल संघ कार्यालय के परिसर में की गयी है। जिसका संचालन और प्रबंधन संकुल स्तरीय संघ द्वारा किया जा रहा है। इसके खुलने से पुस्तकालय संस्कृति को बढावा मिला है, वहीं ग्रामीण बच्चे भी शिक्षण संस्कृति की ओर लौट रहे हैं।

पुस्तकालय के खुलने से स्वयं सहायता समूह से जुड़ी दीदियों एवं उनके परिवार के बच्चे जो पुस्तकें नहीं खरीद सकते या बाजार में उन पुस्तकों की उपलब्धता नहीं है के अध्ययन के लिए सदस्य बनकर निर्धारित समय सीमा में नि:शुल्क पुस्तक निर्गत कराकर पढ़ सकते हैं।

जीविका के संकुल संघ द्वारा खोले गये इस पुस्तकालय से कक्षा 10 से 12 वीं तक के छात्र बिहार बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार 'टर्न दी बस एप्लीकेशन' एवं अन्य डिजिटल माध्यम से पढ़ सकते हैं। इसके साथ ही संकुल संघ द्वारा बीच में पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं अन्य दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में नामांकन कराकर 10वीं, 12वीं, स्नातक एवं स्नातकोत्तर की पढ़ाई पुरी करने के लिए जागरुक एवं सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है।

नवोदय विद्यालय, सिमतुल्ला विद्यालय, सैनिक विद्यालय, कस्तूरबा गांधी विद्यालय सहित अन्य राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालिच आवासीय विद्यालयों के प्रवेश परीक्षा हेतु संकुल स्तरीय संघ पुस्तकालय के माध्यम से व्यापक प्रचार–प्रसार के साथ समुचित अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध करवाएगी। इसके लिए संकुल संघ द्वारा समय–समय पर विद्यार्थियों के बीच प्रतिभा सम्मान, वाद–विवाद, कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा ताकि बच्चों के बीच प्रतियोगिता की भावना आ सके।

जीविका दीदी संचालित पुस्तकालय में बच्चों के पढ़ने के लिए टेबल कुर्सी की व्यवस्था की गयी है। जिससे पुस्तकालय आने वाले बच्चे शांत माहौल में पढ़ाई कर सकें। पुस्तकालय में जीविका के सहयोगी संस्था आई–सक्षम एजुकेशन एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा किताब के साथ–साथ टैबलेट, हेडफोन एवं अन्य शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध करायी गयी है।

जीविका दीदी का पुस्तकालय के संचालन का दायित्व संबंधित संकुल स्तरीय संघ के मास्टर बुककीपर को दिया गया है। एमबीके का कार्य पुस्तकालय में रखी पुस्तकों का रख–रखाब एवं उसका प्रबंधन करना है। इसके साथ ही संकुल स्तरीय संघ की सामाजिक उप समिति द्वारा इसका व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करने के अलावा संकुल स्तरीय संघ एवं ग्राम संगठनों की बैठकों में एजेंडा के रुप में रखना है ताकि समूह से जुड़ी दीदी के बच्चे अधिक से अधिक संख्या में इस पुस्तकालय का लाभ उठा सकें।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर